Impact Factor – 6.261 | Special Issue – 48 | Feb. 2019 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY
UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-research Journal

CREATIVE WRITING IN ENGLISH, MARATHI, HINDI LITERATURE AND TRANSLATION STUDIES

GUEST EDITOR
Prin. (Dr.) S. R. Patil

CHIEF EDITOR
Dr. Dhanraj T. Dhangar

EXECUTIVE EDITORS
Mr. Hemantkumar D. Patil
Dr. V.S. Adhave | Dr. Vanita T. Pawar

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Scanned with OKEN Scanner

४१. साहित्य अनुवाद : प्रक्रिया आणि स्वरुप ११५
डॉ. प्रदीप औजेकर
४२. अनुवादित साहित्य संकल्पना व स्वरूप ११८
प्रा. डॉ. रामलीला सुदामराव पवार
४३. 'गाव कुठे आहे या कथासंग्रहातील अभिव्यक्त होणारी सृजनशीलता' १२१
प्रा. गौतम बाबुलाल थोरात
४४. सर्जनशील लेखन आणि अनुवादीत साहित्य १२४
प्रा. बी. बी. गायकवाड
४५. अनुवाद साहित्याचे स्वरुप आणि सांस्कृतिक महत्व १२७
प्रा. डॉ. हिरालाल सोमा पाटील
४६. अनुवाद प्रक्रिया आणि सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य १२९
डॉ. जितेंद्र शामसिंग गिरासे
४७. साहित्यिक दादासाहेब मोरे यांच्या कादंबरीतील सृजनशीलता – एक दृष्टिक्षेप १३१
प्रा. रवींद्र पी. नगराळे
४८. मारुती चित्तमपल्लींच्या साहित्यातील सर्जनशील निसर्गाविष्कार १३४
प्रा. सचिन अशोक पाटील
४९. अनुवाद प्रक्रिया आणि मराठी साहित्य १३५
प्रा. डॉ. माधव कदम
५०. अनुवाद प्रक्रिया आणि सृजनशीलता १३७
प्रा. डॉ. सतीश मस्के
५१. अनुवादित मराठी साहित्याची परंपरा १४०
प्रा. शरद तुकाराम आंबेकर
५२. परजा (अनुवादित कादंबरी) १४२
प्रा. सुलतान पवार
५३. सृजनशील लेखन आणि अनुवाद १४५
प्रा.डॉ. वसुमती पी. पाटील
५४. प्राचार्य अण्णासाहेब सदाशिव शंकरराव माळी यांच्या साहित्यातून दिसणारी सर्जनशिलता १४७
प्रा. मंगेश पाटील
५५. मराठीतून हिंदी भाषेमध्ये अनुवादित भटक्या समाजातील आत्मकथा : आकलन आणि आस्वाद १५२
प्रा. डॉ. प्रशांत लगडे
५६. ह. मो. मराठे यांच्या कादंबरीतील सर्जनशीलता १५५
डॉ. वाल्मिक शं. आढावे
५७. अनुवादप्रक्रिया आणि मराठी सहित्य १५८
डॉ. मिलिंदकुमार भिकाजी देवरे
५८. पु. ल. देशपांडे यांच्या व्यक्ती आणि वल्लीतील चितळे मास्तरांचा मानसशास्त्रीय दृष्टीकोनातून चिकित्सक अभ्यास १६१
श्री. ज्ञानसागर संतोष सुर्यवंशी

हिंदी

५९. हिंदी महिला कथा साहित्य में कृष्णासोबती की सर्जनात्मकता १६५
प्रा. डॉ. वनिता त्र्यंबक पवार-निकम
६०. रूपसिंह चंदेल का 'गलियारे' उपन्यास का मराठी में अनुवाद : एक विवेचन १६८
प्रा. डॉ. अनिता नेरे, प्रा. अनिता रोहिदास राजबंशी
अन्य भाषाओं में से हिंदी में अनुवादित साहित्यिक रचनाएँ १७१
डॉ. करूणा दत्तात्रय अहिरे

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal ISSN : 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 148 : Creative Writing in English, Marathi, Hindi Literature and Translation Studies February 2019

अन्य भाषाओं में से हिंदी में अनुवादित साहित्यिक रचनाएँ

डॉ. करूणा दत्तात्रय अहिरे
हिंदी विभाग प्रमुख,
श्रीमती विमलबाई उत्तमराव पाटील कला व
कै. डॉ. बी. एस. देसले विज्ञान महाविदयालय,
साक्री, जि. धुलियाँ

भारत बहुभाषी देश है. यहाँ न केवल भाषिक बहुत्व है, तो जाति संप्रदाय, भाषा, धर्म, संकृती आदि में भी विविधता दिखाई देती है। और एस विविधता में सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एकता और अखंडता यह हमारे लिए बडी गौरव की बात है। एस एकबध्दता को बनाने में भाषाओं का बडा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देखा जाए तो हिंदी और मराठी दोनों भाषाएँ स्वतंत्र रूप में अपना अलग अस्तित्व रखती है। इन दोंनो भाषाओं में संरचना में साम्य के साथ वैषम्य भी है। लेकिन भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो महाराष्ट्र के निकटवर्ती अन्य हिंदी भाषीक राज्य है। जैसे भोपाल, रायपूर मुंबई जैसे एक दुसरे से घुलमिल गये है। हिंदी भले ही देश के दस राज्यों के राजभाषा का प्रतिनिधित्व करती हो और मराठी एक महाराष्ट्र का पर साहित्यिक क्षेत्र में मराठी हिंदी के समतुल्य अपना स्थान रखती है। दोनों भाषाओं का उद्गम-विकास, साहित्यिक परंपरा और विधाओं में स्वरूपगत साधर्म्य है।

वर्तमान समय में मराठी कृतियों को हिंदी में और हिंदी कृतियों को मराठी में पहूँचाने का कार्य तेजी से हो रहा है। इस कार्य ने दोंनो भाषाओं को समृध्द बनाने का काम किया है। आज हिंदी में लगभग सभी भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद हो रहें है। और इस अनुवाद कार्य को सहयोग देने का काम 'आंतरभारतीय शासकीय अनुवाद विभाग','भारतीय साहित्य परिषद' 'साहित्य अकादमी' जैसी संस्थाएँ कर रही है। साथ ही पत्र- पत्रिकाओं का योगदान कम नही है, जिसमें अनुवाद भाषा एवं समकालीन भारतीय साहित्य अग्रण्य है। मराठी से हिंदी में पहला अनूदित उपन्यास श्री वामनशास्त्री इस्लामपुरकर का 'प्रणयीमाधव' जो गंगाप्रसाद अग्निहोत्री ने अनुदित कर सन १९०१ में प्रकाशित किया। तब से लेकर आज तक विभिन्न कालजयी वैश्विक संवेदनाओं को अभिव्यक्त करनेवाले उपन्यासों का अनुवाद होता रहा और हो रहा है। सन १९५६ में वि.दा.सावरकर के 'काला पानी' का अनुवाद आनंदवर्धन विदयालंकार ने किया। यह उपन्यास सावरकरजी ने अंदमान के कारागृह में लिखा था। इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद होने का कारण शांतिस्वरूप गुप्त जी सावरकर का व्यक्तित्व जानते है, इसी वर्ष बा. भ. बोरकर के 'देवदासी' इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद बाबूराव जोशी ने कीया।

सन १९५९- ६० में श्री. ना. पेंडसे के 'चट्टान का बेटा' (गारंबीचा बापू) भा.वि.वरेकर के 'विधवा कुमारी' (परतभेट) 'अछूता प्यार विकार वात्सल्य' ह.ना.आपटे के 'चाणक्य चंद्रगुप्त' एवं श्रीपाद जोशी के 'ध्वस्त नीड' 'विस्कटलेले घरटे' को शैलेंद्रकुमार सिंह, रा.र.सर्वटे, ठाकूर राजबहादूर सिंह एवं स्वयं श्रीपाद जोशी ने अनुवादित किया। यह सभी उपन्यास सामाजिक सुरूपता एवं कुरूपता को प्रकट करते है। 'आपटे के उपन्यास में चंद्रगुप्त की माँ मूरा का प्रमुख स्थान है। उसके चित्रण से लेखक के अपार कौशल का परिचय मिलता है। अपने अपमान और पूत्र के अकारण वध का प्रतिशोध लेने की इच्छा करनेवाली मूरा साधारण स्त्री नही है। उसका निश्चय पक्का महास उग्र रहस्यपूर्ण है...'सन-१९६२ में मराठी से हिंदी में अनुवादित करने में रा.र.सर्वटे, ने चंद्रकांत काकोडकर के 'कीर्ति मंदिर' भा.वि. वरेरकर के 'तुफान और जिंदगी' 'तरसे पोलाद' एवं वसंत वरखेडकर के ऐतिहासिक उपन्यास 'सत्तावन का सेनानी' को हिंदी में रुपांतरित किया। सन-१९६३ से १९७० तक मराठी उपन्यासों को हिंदी में अनुवादित करने में रा.र.सर्वटे, बा.द.सातोलकर, बनारसीसिंह, डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त, माधव मोहळकर आदि ने महत्वपूर्ण कार्य। मराठी का एक महत्वपूर्ण और अग्रसर उपन्यास 'बनगरवाडी' जो व्यंकटेश माडगुळर का है। इस प्रकार 'अन्नाभाउ साठे' के 'फकिरा' को हिंदी ने अपना लिया। यह उनका सामाजिक आशय अभिव्यक्त करनेवाला महत्वपूर्ण उपन्यास है। सन-१९८७ मराठी में ग्रामीण लेखन करनेवाले रा.र.बोराळे के 'पाचोळा' को 'तिनका' नाम से वेदकुमार वेदालंकार ने अनुदीत किया। इस प्रकार शंकराव खरात की आत्मकथा 'तराल-अंतराल' को डॉ.केशवविरने अनुदित किया। साथ ही शरणकुमार लिंबाळे की आत्मकथा 'अक्करमाशी' को डॉ.सूर्यनारायण रणसुबेने अनुदित कर हिंदी जगत को दोगले पण के जीवन संवेदनाओं से रुबरु कराया। इन उपन्यासों में सामाजीक, वास्तववादी, ग्रामीण विषयों को कथ्य के रूप में सामने रखा है। जीवनगत समस्याओं,संवेदनाओंसे हिंदी पाठको को परिचित कराया है।

मराठी साहित्य में नाटय विधा का महत्वपूर्ण स्थान है,जो मराठी,हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साथ ही विदेशी भाषाओं में भी अपनी पहचान बना चुका है। कला, संस्कृती, इतिहास, समाज, संगीत, राजनीति, बिगडते परिवारिक रिश्ते मराठी नाटकों के विषय है। 'मराठी रंगमंच का उदय सही रूप में १८४३ में सांगली में हुआ। सांगली के संस्थानिक चिंतामणराव अप्पासाहेब पटवर्धन के आश्रय में विष्णू अमृत भावे ने इ.स.१८४३ में 'सीता स्वयंवर' का नाटय प्रयोग सांगली के लोगों की प्रेरित कीया'। सन १९५८ में रा.र. सर्वटे ने भा.वि.वरेरकर के 'हक्क का गुलाम' एवं 'व्दारका का राजा' नाटक को लागों के सामने रखा। इसी वर्ष विजय तेंडूलकर 'श्रीमंत' एवं कृ.प.खाडिलकर के 'कीचक वध' को वसंत देव भवानीप्रसाद

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

तिवारी ने हिंदी रूप देकर हिंदी की सेवा की। श्रीमंत यह सामाजिक समस्या प्रधान नाटक है। जिसमें मरजाद को बनाये रखने के लिए संभ्रात व्यक्ति के अंतर्द्वन्द एवं घुटन को चित्रण किया है । यह नाटक तत्कालिन सामाजिक विषमता एवं गलत रूढी, परंपरा तथा कुमारी माता की समस्या पर आधारित है। तो 'कीचक वध' में पैराणिक कथानक के माध्यम से तत्कालिन अन्याय अत्याचार वाली राजनीति को अभिव्यक्ति दी,'लोकमान्य टिलक और लॉर्ड कर्जन इस नाटक में भीम और किचक के रूप में पेश किए गए थे'। सन १९६० में विनोदी नाटककार पु.ल.देशपांडे के 'कस्तुरीमृग' 'तुझ आहे तुझपाशी' को राहुल बारापुते ने अनूवादित किया इसी वर्ष भा.वि.वरेरकर के 'यही है वर का बाप' को रा.र.सर्वटे ने हिंदी पाठको के सामने रखा। यह सामाजिक नाटक है।

सन १९६० के बाद जो मराठी नाटक हिंदी में अनूदित हुए वह तत्कालीन राजनीति, अर्थ समाज, मूल्यहिन जीवन की विसंगतियों, मध्यमवर्ग एवं आधुनिक नारी के यथार्थ रूप को प्रकट किया है। 'खामोश आदालत जारी है' में तेंदुलकर ने समाज की कडवी सच्चाई स्त्री-भ्रृणहत्या आदि विषयों को प्रस्तुत किया है। इसमे निम्न मध्यमवर्गीय समाज की कुंठाओं और क्रुरता में घिरी एक स्त्री की यातनापूर्ण मन को झकझोर देनेवाली तस्वीर है। घाशीराम कोतवाल में नाना फडणीस को एक कामुक व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। तेंडूलकर ने मराठी नाटकों को विभिन्न सामाजिक समस्याओं को दर्शकों के सामने रखने का प्रयास कीया है। 'किंतू अपनी सत्ताविरोधी भंगिमाओं तथा स्थापित मूल्य-व्यवस्था के सशक्त दृश्यांकित प्रतिरोध के लिए विजय तेंडूलकर केवल मराठी रंगमंच और रंगजगत में ही नही, बल्कि भारतीय रंगमंच और भाषा-साहित्य में सदैव याद किए जाते है,'।

हिंदी में अनूदित मराठी कहानी जो अपने लघु रूप में आशय एवं अभिव्यक्ति के क्षेत्र में वैविध्यपूर्ण जानी जाती है। मराठी की अब तक लगभग ३०० से भी अधिक कहानियों के हिंदी अनुवाद प्राप्त होते है। सन १९४७ में साने गुरूजी के 'विश्राम संग्रह' को बाबूराव कुमठेकर ने अनुदित कीया। तो श्री. म. साठे उपेक्षितों के मनोगीत संग्रह को ग.र. वैशयापन ने हिंदी रूप दिया, उपेक्षित, अस्पृश्य जनजातियों की व्यथा-वेदना को वाणी देकर सामाजिक विषमता को स्पष्ट करता है। सन १९७० के बाद एक सशक्त अनुवादक प्रकाश भातब्रेंकर की अनूदित कहानियोंका दौरआया इन्होंने 'शाम की कंटिन्यूटी' विदयाधर पुंडलिक की 'वारी, दिवार, सती, जयवंत दलवी की 'अपूर्णाक' शह एक अंतहिन गुडडा क्यों रिश्ते नाते को अनूदित कर हिंदी पाठकों को मराठी के कहानीकारों से परिचित कराया दलवी के कहानियों के केंद्र में गहरी प्रेमभावना है। तथा इन सभी कहानियों में पारिवारीक सामाजिक मनोवैज्ञिक दलित चेतना एवं यौन सुचिताओं पर लिखी कहानियों का समावेश हैं। 'बाबूराव बागुल की 'जब मैंने अपनी जाति छिपाई थी' में मनुवादी संस्कृति के शिकारी बने एक शिक्षित युवक की करूण कथा है, तो भावे की 'फुलवा' में वर्तमान युग में टूटते जीवन मूल्यों की पूर्नस्थापना है। हिंदी साहित्य में मौलिक योगदान देनेवाले प्रभाकर माचवे ने मराठी से हिंदी में पु.शि.रेगे 'अवलोकिता' १९६५ कमल आपटे की 'गलत गणित' को हिंदी रूप दिया है। बादिवडेकर के समान ही आज अशोक बाचुलकर एवं निशिकांत ठकार भी मराठी कहानियों के अनुवाद के क्षेत्र मे अपनी भूमिका निभा रहे है। बाचुलकर ने स्वयं की 'अपना घर' वि.वा.शिरवाडकर की सत्ता को समकालिन भारतीय साहित्य एवं भाषा इन पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित किया तो, ठकार ने शरणकुमार लिंबाले की 'सरहद' २००३ 'जुताचोर' २००७ को हिंदी रुप दिया। लिंबाले की दोनों कहानियाँ हिंदी में दलित चेतना को लेकर अवतीर्ण हुई हैं।

'हिंदी में अनूदित मराठी कविता अनूवाद करना कठिन तो है, पर असंभव नही, काव्य उसकी लय गति बलाघात व्यंग्यार्थ से भिन्न करके नही समझा जा सकता है, वहाँ गदय में विचार और वक्तव्यों को पृथक करके लक्ष्य भाषा में साधारणत; रुपांतरित किया जा सकता है। 'मराठी कविता के हिंदी अनुवादों का प्रारंभ उन्नीसवीं शती के मध्य में हुआ और आज भी जारी है। इस परंपरा में मराठी के प्रतिनीधि कवियों की कविताओं के हिंदी अनुवाद हुए है। इन अनुवादों में प्राचीन काल से लेकर आज तक लिखी जा रही कविताओं का समावेश है। हिंदी काव्यनुवादों का सूत्रपात समर्थ रामदास के काव्यग्रंथ 'दासबोध' से होता है। जो रामचंद्र वर्मा व्दारा १९४५ में अनुदित होकर 'हिंदी साहित्य कुटीर' बनारस से प्रकाशित हुआ। दासबोध में कवि की नीतिपरक, कर्मपरक, आध्यत्मिक कविताएँ है। रामदास्वामीजी जैसे को वैसा व्यवहार करने का उपदेश देते हैं। इनके दूसरे काव्यग्रंथ 'मन के श्लोक' का सन १९४९ में दिवाकर जोगलेकर ने अनुवाद किया। यह ग्रंथ संस्कारशील मन मानव के निर्माण की अपेक्षा रखता है। यह श्लोक महाराष्ट्रीय समाज में त्रिकाल संध्या सामूहिक भोज एवं मांगल्यपर कार्यक्रमों में आज भी सुने जाते है।

आज वर्तमान युग वैश्वीकरण, औदयोगिकरण, जागतिकीकरण एवं बाजारवाद का युग है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नये-नये अविष्कार संप्रेषण के साधनों का विकास एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और यही कारण है कि बीसवी एवं इक्कीसवी शताब्दी को अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी कहा जाने लगा है। इन बढते मीडिया एवं संप्रेषणों के साधनों ने उपनिषदीय संकल्पना 'वसुधैव कुटुंम्बकम' को साकार किया और विश्व को एक वैश्विक ग्राम का रूप दिया। इन संप्रेषणों के साधनों में अनुवाद अपना विशिष्ट स्थान रखता है।अनुवाद के माध्यम से एक भाषा की सामग्री दूसरी भाषा तक पहुँचती है।

संदर्भ :

१. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त - हिंदी तथा मराठी उपन्यासोंमे का तुलनात्मक अध्ययन
२. डॉ. वसंत बिरादास - आधुनिक मराठी वाडमयाचा इतिहास
३. शरणकुमार लिंबाळे - नरवानर, पृ. पुस्तक का स्कॅश
४. गो. म. कुलकर्णी - मराठी नाटय सृष्टी
५. डॉ. विदया केशव चिटको - मराठी कहानियों के हिंदी अनुवाद की समस्याएँ, अनुवाद
६. डॉ. गोरख काकडे - हिंदी में अनूदित दलित मराठी आत्मकथा

Scanned with OKEN Scanner